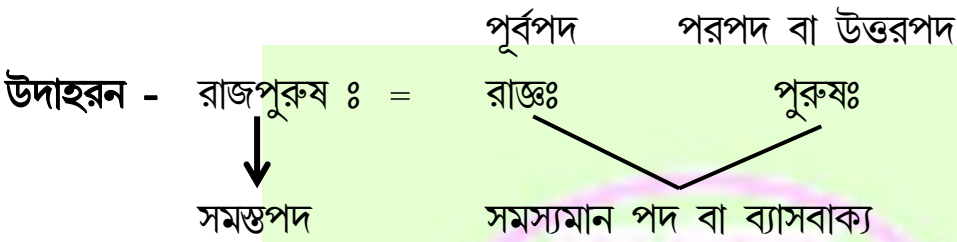


समास शब्दों के व्युत्पत्ति हल सम्-अस् + घञ् = समास।

समास शब्दों के साधारण अर्थ हल संक्षेप।

‘एकपदीभावः समासः’ - दुई वा ततोधिक पद एकपदे परिनत हওয়ার नाम समास।

समस्यमान पद - ये समस्त पद मिलित ह्ये समास ह्ये तके समस्यमान पद वा व्यासवाक्य वा विग्रहवाक्य बले।



❖ पानिनि तौर अष्टाध्यायी ग्रन्थे बलेह्येन ‘समर्थः पदविधिः’। सम’ अर्थात् तुल्य, अर्थात् अर्थात् प्रयोजन; ये सकल शब्दों के प्रयोजन तुल्य वा समान ताहा समर्थ। यथा - राजः पुरुषः এই वाक्ये राजाधीन पुरुष बोवाय , এই अर्थ बोवाते हले ‘राजन्’ एवं ‘पुरुष’ এই दुটি शब्दों के समान प्रयोजन। এই दुটি शब्द परस्पर अन्वित ना हले ये कौन एकटि शब्दों के द्वारा उक्त अर्थों के प्रतीति ह्ये ना।

❖ पदविधिः अर्थात् पदसम्बन्धे ये विधान। पदविधि शब्दों के पदसम्बन्धे विधान এইरूप अर्थ ह्ये। ये शब्दसमन्वये वा पदसमन्वये এই विधान प्रयुक्त ह्ये ताहाओ ‘पदविधि’ नामे अभिहित। पाँचटि स्केत्रे এইरूप समन्वय ह्ये कृत्, तद्धित सनाद्यन्त धातु, समास ओ एकशेष।

समास करते गेले व्यपेक्षा एवं एकथीभाव এই दुई प्रकार सामर्थ्येन प्रयोजन। विशिष्टा अपेक्षा-व्यपेक्षा। वाक्य हते गेले आकाञ्छा, योग्यताके बोवाय। पदसमष्टि यदि परस्पर सन्निहित ह्ये एकटि संगत अर्थ प्रकाश करे तबे ताहा समर्थ। यदि समर्थ ह्ये ताहा समर्थ । यथा राजः पुरुष এই वाक्ये ‘राजन्’ ओ ‘पुरुष’ এই विग्रहवाक्ये सामर्थ्य थाकाय समास सम्भवपर, किन्तु ‘भार्या राजः, पुरुषो देवदत्तस्य’ এই वाक्ये ‘राजन्’ ओ ‘पुरुष’ शब्द

- : समास : -

যেহেতু পরস্পর সাপেক্ষ নয় অতএব এখানে রাজ্ঞঃ পুরুষ সমাস হবে না। রাজন ও পুরুষ এই বাক্যে যথাক্রমে ভার্যা ও দেবদত্তের সহিত অন্বিত। যেখানে সাপেক্ষতা হেতু 'রাজপুরুষ' সমাস হয় সেখানে সমাস হওয়ার পর সমস্যমান 'রাজন' ও 'পুরুষ' শব্দের পৃথক অর্থের প্রধান্য থাকে না, এই দুই শব্দের মিলিতার্থের অর্থাৎ রাজাধীন পুরুষ অথবা পুরুষযুক্ত রাজা এই অর্থেরই প্রতীতি হয়। মিলিতার্থের এই প্রতীতি সমাসের এক বিশেষ সামর্থ্য।

বৃত্তি :- 'পরার্থভিধানং বৃত্তিঃ' শব্দের মধ্যে যে নিজস্ব অর্থ আছে তদতিরিক্ত অর্থ আছে তদতিরিক্ত অর্থ যার দ্বারা অভিহিত হয় তাকে বৃত্তি বলে। বৃত্তি পাঁচ প্রকার যথা-কৃৎ, তদ্ধিত সমাস, একশেষ, সনাদ্যন্ত ধাতু।

উদাহরন :- কৃৎ - আহতুর্ম্ - আহরনং কর্তুর্ম্
তদ্ধিত - আর্জুনিঃ - অর্জুনস্য অপত্যং পুমান
সমাস - পীতাম্বরঃ - পীতম অম্বরং यस্য সঃ
একশেষ - পিতরৌ - পিতা চ মাতা চ

বিগ্রহ :- 'বৃত্ত্যর্থাবোধকং বাক্যং বিগ্রহঃ' বিশিষ্ট অর্থের প্রতিপাদক বাক্যকে বিগ্রহ বলে। বিগ্রহ দুই প্রকার লৌকিক এবং অলৌকিক ব্যাকরন সংস্কৃত বাক্য লৌকিক বিগ্রহবাক্য। ব্যাকরন সংস্কৃত না হওয়ার যা প্রয়োগের আযোগ্য আসাধু বাক্য তা অলৌকিক বিগ্রহবাক্য।

উদাহরন :- ভূতপূর্ব
লৌকিক বিগ্রহ - পূর্বং ভূতঃ
অলৌকিক বিগ্রহ - পূর্ব অম্ ভূত সু